2. समकालीन साहित्यिक विमर्श चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएँ

दिनांकः 24 व 25–06–2021

उक्त संगोष्ठी में मुख्य वक्ता जय वर्मा, वरिष्ठ साहित्यकार, नाटिंघम, यू.के., तेजेन्द्र शर्मा, वरिष्ठ साहित्यकार, लन्दन, यू.के, प्रो. संजीव कुमार दुबे आदि ने अपना उद्‌बोधन दिया। इस बेवीनार में कुल 978 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

BROCHURE

DAY-1

DAY-2

Registration Link of Conference

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSevIy7rRq2Ft_UY9_ob7rnAE9wjaR5Bv7voHwcHOCFZ2DFEBw/viewform?usp=sf_link

You Tube Link of Conference

https://youtu.be/-rJiIdy_rD8

Photographs of Conference / News Papers Cutting/ Whatapp Chats

जाने-माने साहित्यकार जुड़ेः चौमूं में हिंदी साहित्य पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी शुरू

महानगर संवाददाता

चौमूं। राजकीय कन्या महाविद्यालय चौमूं, जयपुर और क्रेटेंड टीवी के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आरंभ हुआ। संगोष्ठी की विधिवत शुरुआत करते हुए संयोजिका डॉ. प्रणु शुक्ला ने मां सरस्वती की वंदना की। कॉलेज प्राचार्य डॉ. कविता गौतम ने वक्ताओं का स्वागत करते हुए कहा कि यह हमारे कॉलेज के लिए गौरवपूर्ण बात है कि हमसे देश-विदेश के जाने-माने साहित्यकार और वक्ता जुड़े हैं। मुख्य वक्ता केंद्रीय विश्वविद्यालय गुजरात के हिंदी आलोचक, हिंदी अध्ययन केंद्र के अध्यक्ष एवं डीन प्रोफेसर संजीव दुबे ने कहा कि हिंदी साहित्य के इन विमर्शों से लोकतंत्र मजबूत होता है और यह सारे विमर्श हिंदी साहित्य को

एक नया मजबूत आधार प्रदान करते हैं और आधुनिकता और अस्मितामूलक साहित्य के लिए एक नया आधार तैयार करते हैं।

दूसरे वक्ता लंदन से शामिल हुए प्रसिद्ध कहानीकार तेजेंद्र शर्मा ने प्रवासी साहित्य पर चर्चा करते हुए कहा कि विमर्श लेखकों पर थोपे हुए से लगते हैं। उनका मानना है कि संवेदना के रूप में लिखा हुआ साहित्य स्वयं एक विमर्श के रूप में उपस्थित होता है। नॉटिंघम यूके से उपस्थित वैश्विक साहित्यकार जय वर्मा ने भारत की संस्कृति और परंपराओं को साहित्य से जोड़ते हुए कहा कि प्रवासी साहित्य भारतीय मन की ही आवाज है। समकालीन साहित्य वह है जो हम जीते हैं, जो हमारे आसपास के परिवेश में मौजूद है। विक्रम विश्वविद्यालय के मुख्य कुलानुशासक व हिंदी विभाग के अध्यक्ष शैलेंद्र शर्मा ने हिंदी विमर्श के अधिकांश पक्षों पर चर्चा करते हुए कहा कि जो विषय नजरों से ओझल हो जाए, यह विमर्श उन विषयों को, साहित्य की नजरों में और केंद्र में लाने का काम करता है।

युवा आलोचक असम विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर जय कौशल ने विशेष तौर पर दलित आदिवासी विमर्श का जिक्र करते हुए पूर्वोत्तर साहित्य को साहित्य को समकालीन विमर्श से जोड़ा। उनका मानना था कि भारत विविधताओं का देश है और प्रत्येक क्षेत्र कि अपनी साहित्यिक संवेदनाएं हैं, अतः सब पर बात की जानी चाहिए। सत्र के अंत में कॉलेज के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. राजेंद्र कुमार ने वक्ताओं का आभार जताया।

दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के पहले दिन हिन्दी साहित्य के वक्ताओं ने साझा किये अपने विचार

संजीवनी टुडे

जयपुर। राजकीय कन्या महाविद्यालय चौमूं, जयपुर और क्रेडेंट टीवी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय का आरंभ हुआ। संगोष्ठी की विधिवत शुरुआत करते हुए संयोजिका डॉ प्रणु शुक्ला ने मां सरस्वती की वंदना की। कॉलेज की प्राचार्य डॉ कविता गौतम ने सभी वक्ताओं का स्वागत करते हुए कहा कि यह हमारी कॉलेज के लिए गौरव पूर्ण बात है कि हमसे देश विदेश के जाने-माने साहित्यकार और वक्ता जूड़े हैं। मुख्य वक्ता के रूप में केंद्रीय विश्वविद्यालय गुजरात के जाने-माने हिंदी आलोचक, हिंदी अध्ययन केंद्र के अध्यक्ष एवं डीन प्रोफ़ेसर संजीव दुबे ने कहा - हिंदी साहित्य इन विमर्शों से लोकतंत्र मजबूत होता है और यह सारे विमर्श हिंदी साहित्य को एक नया मजबूत आधार प्रदान करते हैं उत्तर आधुनिकता और अस्मितामूलक साहित्य के लिए एक नया आधार तैयार करते हैं । दूसरे वक्ता के रूप में लंदन से शामिल हुए प्रसिद्ध कहानीकार तेजेंद्र शर्मा ने प्रवासी साहित्य पर चर्चा करते हुए कहा कि

विमर्श लेखकों पर थोपे हुए से लगते हैं उनका मानना है कि संवेदना के रूप में लिखा हुआ साहित्य स्वयं एक विमर्श के रूप में उपस्थित होता है। नॉटिंघम यूके से उपस्थित जानी मानी वैश्विक साहित्यकार जय वर्मा ने भारत की संस्कृति और परंपराओं को साहित्य से जोड़ते हुए कहा- प्रवासी साहित्य भारतीय मन की ही आवाज है । समकालीन साहित्य वह है जो हम जीते हैं जो हमारे आसपास के परिवेश में मौजूद है । विक्रम विश्वविद्यालय के मुख्य कुलानुशासक व हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो शैलेंद्र शर्मा ने हिंदी विमर्श के अधिकांश पक्षों पर चर्चा करते हुए कहा , जो विषय नजरों से ओझल हो जाए, यह विमर्श उन विषयों को, साहित्य की नजरों में और केंद्र में लाने का काम करता है । युवा आलोचक असम विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर जय कौशल विशेष तौर पर दलित आदिवासी विमर्श का जिक्र करते हुए पूर्वोत्तर साहित्य को साहित्य को समकालीन विमर्श से जोड़ा । उनका मानना था कि भारत विविधताओं का देश है और प्रत्येक क्षेत्र कि अपनी साहित्यिक संवेदनाएं हैं अतः सब पर बात की जानी चाहिए । सत्र के अंत में कॉलेज के एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ राजेंद्र कुमार सभी वक्ताओं धन्यवाद करते हुए आभार ज्ञापित किया।

DAY-1 PHOTO

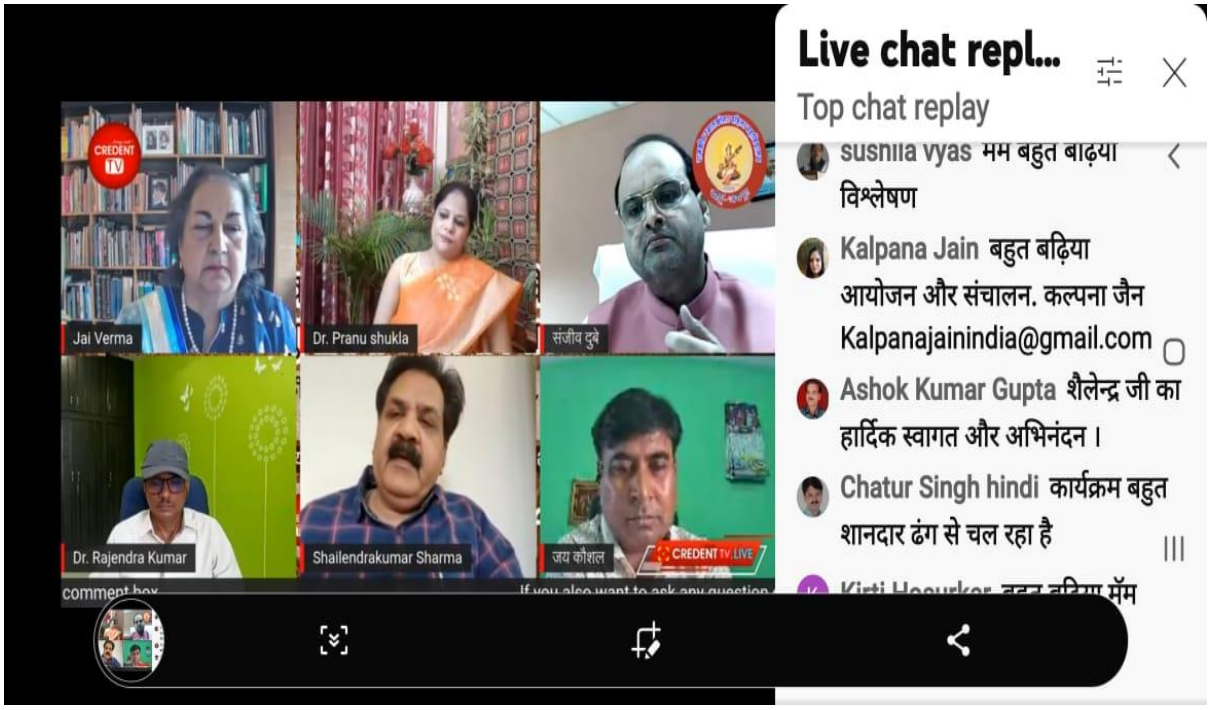

DAY-2 PHOTO